दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
मई – 2009
समय –10.00 बजे से 1.00 तक

दिनाँक :30–05–2009

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
एम.ए. द्वितीयवर्ष परीक्षा
विषय: हिन्दी, प्रश्न पत्र–6
शीर्षक :प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

समय – 3 घंटे

पूर्णांक : 75

सूचना : 1. खंड–क से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। *4x10=40*
2. खंड ख अनिवार्य है।

खंड –क

1. पद्मावती समय के आधार पर चन्दबरदाई के काव्य–कला की विवेचना कीजिए।
2. विद्यापति ने पदावली में भक्ति एवं श्रृंगार का सुंदर समन्वय किया है। सिद्ध कीजिए।
3. कबीर भक्त कवि होने के साथ–साथ सच्चे समाज–सुधारक भी थे। सिद्ध कीजिए।
4. नागमती वियोग खंड में वर्णित 'बारह मासा' का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
5. भ्रमरगीत के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
6. विनय पत्रिका के आधार पर तुलसी की भक्ति–भावना को स्पष्ट कीजिए।
7. रीतिकलीन काव्य परंपरा में बिहारी का स्थान निर्धारित कीजिए।

खंड ख

5x7=35

निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

प्रिय प्रथिराज नरेस जोग, लिषि कग्गर दिन्नौ।
लगुन बरग रचि सरब, दि द्वादस ससि लिन्नौ॥
सै अरु ग्यारह तीस साष संवत परमानह।
जोवित्री कुल सुद्ध वरनि वर रष्हु प्रानह॥

अथवा

कर पकर पीठ हय परि चढाय।
लै चल्यौ नृपति दिल्ली सुराय॥
भइ षवरि नगर बाहिर सुनाय।
पद्मावतीय हरि लीय जाय॥

हेरत–हेरत हे सखी,रहा कबीर हिराई।
बूँद समानी समुंद मै,सो कत हेरी जाय॥

हम घर जाल्या आपणां,लिया मुराडा हाथि।
अब घर जालौं तास का,जे चले हामारे साथि॥

अथवा

कबीर सूता क्या करे,जागि न जपै मुरारि।
इक दिन सोवन होइगा,लंबे पाँव पसारि॥

P.T.O.

जाका गुरु भी अंधला,चेला खरा निरंध ।
अंधे अंधे ठेलिया, दून्यू कूप पडंत ॥

(ग) भा भादो दूभर अति भारी, कैसे भरौं रैनि अंधियारी ॥
मंदिर सून पिउ अनतै बसा । सेज नागिनी फिरि फिर डसा ॥
रहौ अकेलि गहे एक पाटी । नैन पसारि मरऔं हिय फाटी ।
चमक बीजु, घन गरजि तरासा । बिरह काल जीउ गरसा ॥

अथवा

रोइ गँवाए बारह मासा । सहस सहस दुख एक एक साँसा ॥
तिल तिल बरखि बरखि परि जाई । पहर पहर जुग जुग न सेराई ॥
सो नहिं आवै रूप मुरारि । जासौं पाव सोहाग सुनारी ॥
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा । कौन सो घरी करै पिउ फेरा ?

(घ) कौ ब्रज बाचत नाहिंन पाटी ।
कत लिखि लिखि पठवत नंदनंदन, कठिन बिरह की भाटी ॥
नयन, सजल कागद अति कोमल कर आँगुरी अति ताती ।
परसत जरें, बिलोकत भीजै, दुहूँ भाँति दुख छाती ॥
देखे जियहिं स्यामसुंदर के रहहिं चरन दिनराती ॥

अथवा

अति मलीन वृषभान कुमारी ।
हरि स्रमजल अंतर–तनु भीजे,ता लालच न धुवावत सारी ॥
अधोमुख रहति उरध नहिं चितवति,ज्यों गथ हारे थकित जुआरी ॥
छूटे चिहुर,बदन कुम्हिलाने,ज्यों नलिनी हिमकर की मारी ॥
हरि–संदेश सुनि सहज मृतक भई,इक बिरहिनि दूजे अलिजारी ॥

(च) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागर सोय ।
जा तन की झाँई परे, स्याम हरित दुति होय ॥

बतरस लालच लाल की,मुरली धरी लुकाय ।
सौंह करै, भौंहन हँसै, देन कहै,नटि जाय ॥

अथवा

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय ।
वा खाए बौरात है, या पाए बौराय ॥

चिरजीवो जोरी जुरै, क्यों न सनेह गँभीर ।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर ॥

******